डॉ संजय शर्मा 5

UGC Approved Journal No - 40957
ISSN 0974 - 7648

JIGYASA

An Interdisciplinary Peer Reviewed Refereed Research Journal

जिज्ञासा

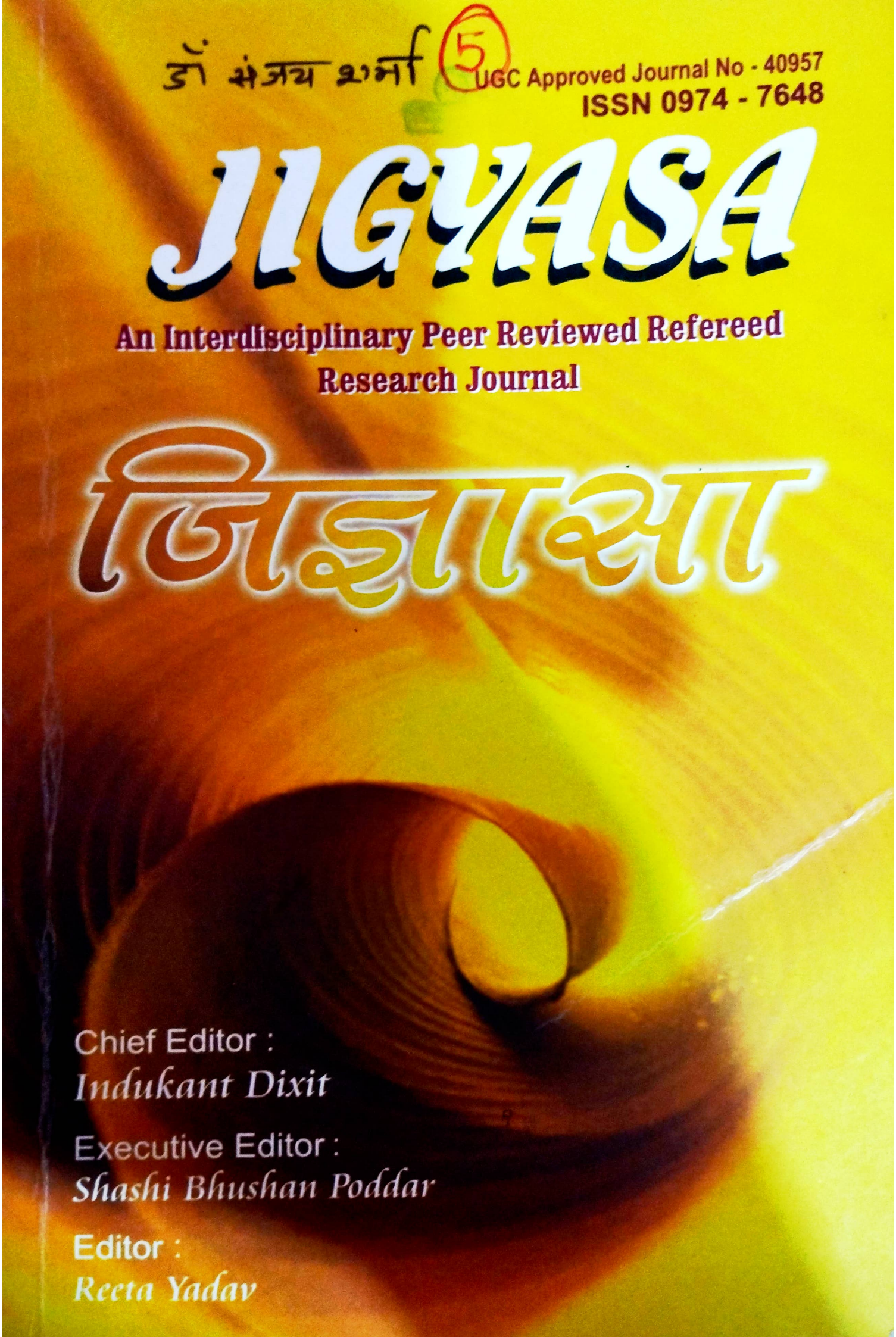

Chief Editor :
Indukant Dixit

Executive Editor :
Shashi Bhushan Poddar

Editor :
Reeta Yadav

UGC Approved Journal No – 40957
(IIJIF) Impact Factor- 4.172
Regd. No. : 1687-2006-2007 ISSN 0974 - 7648

JIGYASA

AN INTERDISCIPLINARY PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

Chief Editor : *Indukant Dixit*

Executive Editor : *Shashi Bhushan Poddar*

Editor
Reeta Yadav

Volume 12 March 2019 No. II

Published by
PODDAR FOUNDATION
Taranagar Colony
Chhittupur, BHU, Varanasi
www.jigyasabhu.blogspot.com
www.jigyasabhu.com
E-mail : jigyasabhu@gmail.com
Mob. 9415390515, 0542 2366370

JIGYASA, ISSN 0974-7648, Vol. 12, No. II, March 2019

- **प्रेम की प्रकृति** — 1008-1013
  डॉ. विमलेन्द्र कुमार विमल, प्राध्यापक (हिन्दी विभाग), एस. आर. सी. के. महाविद्यालय, समस्तीपुर-848101
- **भारत में सुशासन : निजीकरण बनाम लोककल्याणकारी राज्य** — 1014-1019
  डॉ. बेबी सिंह
- **बिहार के कुछ प्रमुख बकाश्त संघर्ष- एक पुनरावलोकन** — 1020-1024
  डॉ. माया कुमारी, पी.एच.डी., इतिहास विभाग, मगध विश्वविद्यालय, (बोध गया)।
- **जनपद सोनभद्र में अनुसूचित जनजातियों का भौगोलिक अध्ययन** — 1025-1032
  डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल
- **नैतिक दृष्टिकोण में अधिकार और कर्त्तव्य** — 1033-1038
  डॉ. संतोष कुमार, स्नातकोत्तर दर्शनशास्त्र, मगध विश्वविद्यालय, (बोध-गया)
- **नारीवादी चिन्तन की माँ मैरी वुलस्टोनक्राफ्ट का व्यक्तित्त्व व कृतित्त्व** — 1039-1042
  संजय शर्मा, शोधार्थी, राजनीति विज्ञान, वी.बी.एस. पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर
- **आसियान एक क्षेत्रीय संगठन के रूप में** — 1043-1047
  उदय भान यादव, यू.जी.सी.-एस.आर.एफ., राजनीति विज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
- **कालिदास की कृतियों में सौन्दर्य** — 1048-1051
  संजीव कुमार, शोधार्थी, संस्कृत विभाग, जय प्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा, रजी.- आर/2388/2017
- **चिंता का स्वरूप एवं उसका प्रभाव : मनोवैज्ञानिक अध्ययन** — 1052-1054
  मनीषा कुमारी, नेट (मनोविज्ञान) +2 Teacher (Senior Secondary Teacher) B.N.R. Training College, Gulzarbagh, Patna-6
- **सार्क की चुनौतियाँ एवं समाधान में भारत की भूमिका** — 1055-1059
  रौशन कुमार, शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना
- **अवध के सन्त कवियों की लोकानुभूति** — 1060-1067
  भावेश त्रिपाठी, शोध-छात्र, हिन्दी, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.)

नारीवादी चिन्तन की माँ मैरी वुलस्टोनक्राफ्ट का व्यक्तित्त्व व कृतित्त्व

संजय शर्मा *

नारीवादी विचारधारा 'स्त्री हक' की बात करती है। यह विचारधारा इस बात की माँग करती है कि स्त्री जीवन मानवीय गरिमा, स्वतन्त्रता समानता से युक्त हो। पितृसत्तात्मक समाज ने स्त्री के बारे में जो मान्यताएँ पूर्वाग्रह पाल रखे हैं, उसका अंत हो। इस विचारधारा की जननी 'मैरी वुलस्टोनक्राफ्ट हैं। उनके तर्कों ने पितृसत्तात्मक समाज की जड़ें हिला दी। इस पुरुष सत्तात्मक समाज के पोषकों ने उनको ''पुरुषों से घृणा' करने वाली और 'भगवान से नाराज औरत' के रूप में''[1] चित्रित किया वहीं दूसरी ओर 'ईमा गोल्डमैन उन्हें आधुनिक नारीत्त्व के अग्रणी के रूप में स्वीकार करते हुए श्रद्धांजलि देती है।'[2] मैरी का निजी जीवन सामाजिक, नैतिक अंधविश्वासों के खिलाफ संघर्ष का सजीव दस्तावेज रहा जिसकी वजह से वह हमेशा विवादित रही। पश्चिम और पूर्व में उनकी उपेक्षा हुई। भारत जैसे देश के लोग इस तथ्य से अवगत नहीं है कि 'नारीवाद' की प्रथम शास्त्रीय कृति की लेखिका मैरी वुलस्टोनक्राफ्ट है। ऐसे में उनके व्यक्तित्त्व व कृतित्त्व पर प्रकाश डालना अपरिहार्य हो जाता है। इससे नारी अधिकारों की माँग करने वाले लोगों, संस्थाओं व सामाजिक एक्टिविस्टों को प्रेरणा मिलेगी। शोधपत्र में नारीवाद की जननी मैरी वुलस्टोनक्राफ्ट के व्यक्तित्त्व व कृतित्त्व पर प्रकाश डाला गया है।

मैरी वुलस्टोनक्राफ्ट को पहली नारीवादी चिंतक के रूप में ख्याति अर्जित है। मैरी एक लेखिका, चिंतक, पहली नारीवादी व महिला अधिकारों का समर्थन करने वाली थी। 'वुलस्टोनक्राफ्ट का जन्म 27 अप्रैल, 1759 में, स्पिटलफील्ड लंदन में हुआ था। वे अपने माता–पिता की सात संतानों में से दूसरी थी। उनके पिता एडवर्ड जॉन एक बुनकर थे और उनकी माता एलिजाबेथ डिक्सन थी।[3] मैरी का परिवार बार–बार यहाँ से वहाँ जगह बदलता रहा। इस वजह से उसका बचपन अलग–अलग जगहों पर बीता। वह अपने बचपन में वेल्स में एपिंग, बार्किंग, बेवर्ली, होक्स्टन, लार्फान व वालवार्थ में रहीं। उसने महिला जीवन को बड़ी बारीकी से जाना। उसने घर चलाने के लिए शिक्षिका व नौकरानी का कार्य किया। 'प्रबोधनकाल के दार्शनिकों की कृतियों के अध्ययन से उनकी विद्रोही भावना को नया वैचारिक आधार मिला।'[4] मैरी ने बहन एलिजा व मित्र फैनी ब्लड के साथ मिलकर नेविंगटन ग्रीन नामक कस्बे में सन् 1784 ई० में एक स्कूल खोला। उसकी दोस्ती यहीं पर रिचर्ड प्राइस व जोसेफ प्रीस्टले से हुई। ये दोनों उन

* शोधार्थी, राजनीति विज्ञान, वी.वी.एस. पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर

दिनों 'रैशनल डिसेंटर्स' नाम के एक ग्रुप के नेता थे। चर्चित प्रकाशक 'जोसेफ जानसन' से मैरी की मुलाकात रिचर्ड प्राइस के घर हुई। मैरी के प्रबोधनकालीन तर्कों से युक्त शिक्षा विषयक मतों से प्रभावित हो लिखने का आग्रह किया। 'जॉनसन के आग्रह पर मैरी ने 'थॉट्स ऑन एजुकेशन ऑफ डॉटर्स' पुस्तक लिखी जो 1787 में प्रकाशित होने के साथ विवादों के घेरे में आ गयी। .... जॉनसन ने मैरी की सहायता से प्रसिद्ध रेडिकल पत्रिका 'एनालिटिकल रिव्यू' की शुरुआत की।'[5] मैरी ने 1793 में फ्रांस की यात्रा की वहाँ पर उनकी मुलाकात अमेरिकी लेखक और व्यापारी गिलबर्ट इमले से हुई। 'इमले और मेरी की पहली संतान फेनी 1795 में पैदा हुई।'[6] मैरी ने एक व्यापारिक यात्रा 'स्कैण्डेनेविया' की यात्रा से वापस आकर उन्होंने पाया कि इमले का किसी अन्य स्त्री के साथ संबंध है। 'भग्नहृदय मैरी इंग्लैण्ड वापस लौटी। निराशा के क्षणों में उन्होंने एक बार आत्महत्या की कोशिश भी की।'[7] विलियम गाडविन और मैरी ने 1797 में शादी की 'जल्द ही मैरी वोल्सस्टोनक्राफ्ट की दूसरी बेटी का जन्म हुआ, जिसे उन्होंने अपना ही नाम दिया – मैरी।[8] मैरी के जन्म के बाद मेरी वोल्सस्टोनक्राफ्ट बुखार से पीड़ित हो गयी और 10 सितम्बर, 1797 ई० को उनका देहान्त हो गया।

मैरी लिखित कृतियाँ निम्नवत हैं – ''थॉट्स आन द एजुकेशन ऑफ डॉटर्स विद रिफ्लेक्शंस ऑन फीमेल कंडक्ट इन द मोर इंपोर्टेंट ड्यूटी ऑफ लाइफ, (Thought on the education of daughters : with Reflections on Female Conduct in the more important duty of life (1787), मैरी : ए फिक्शन (उपन्यास), (Mary : A Fiction (Noval) 1788), ओरिजनल स्टोरी फ्राम द माइंड टू ट्रुथ एंड गुडनेस इज द ऑनली कम्पलीट वर्क ऑफ चिल्ड्रन लिटरेचर (Original Stories from the Real life : with conversations calculated to Regulate the Affections, and from the mind to Truth and goodness is the only complete work of children Literature by Mary Wollstonecraft, 1788), एन हिस्टॉरिकल एंड मॉरल व्यू ऑफ द ओरिजिन एंड प्रोग्रेस ऑफ द फ्रेंच रेवोल्यूशन, (An Historical and moral view of the Origin and Progress of the French Revaluation and effect it has produced in Europe 1975)[9] विंडीकेशन ऑफ द राईट्स ऑफ वूमेन (Vindication of the Rights of Woman 1792) व 'लैटर रिटन ड्यूरिंग ए शार्ट रेजिडेंस इन स्वीडन, नार्वे एंड डेनमार्क, (Letter written during a short residence in Sweden, Norway and Denmark 1796) और मारिया : ऑर द रॉन्ग ऑफ वीमेन, (Maria : or the wrong of women 1798)[10] उनकी महत्त्वपूर्ण रचना है। 'विडीकेशन ऑफ द राइट्स ऑफ वूमेन' को काफी विरोध का सामना करना पड़ा 'मैरी ने अपनी इस पुस्तक में टामस पेन के विचारों का विरोध किया। 'स्वयं टामस पेन ने भी मैरी वुलस्टोनक्राफ्ट की कृति की भरपूर प्रशंसा की।'[11] मैरी वुलस्टोनक्राफ्ट की उन्नीसवीं सदी में उन्होंने पत्नी को याद करते हुए मेमोईर्स ऑफ द ऑथर

ऑफ ए विंडीकेशन ऑफ द राईट्स वीमेन (1798) लिखा। कई जीवनियाँ प्रकाशित हुई इनमें से 'पहली स्वयं उनके पति विलियम गाडविन ने लिखी।'[12] 'जनेट टोड (Janet todd) द्वारा संपादित पुस्तक व मैरी वुलस्टोनक्राफ्ट : ए रिवोल्यूशनरी लाईफ (Mary Wollstonecraft : A Revolutionary life, 1989) चार खंडों में प्रकाशित है। जनेट टोड ने 'ए मैरी वुलस्टोनक्राफ्ट एंथोलॉजी' (1977) (A Mary Wollstonecraft) का संपादन किया।'[13] इनके अलावा राल्फ एम० वार्डले, एडना निक्सन, एलेनोर फ्लेक्सनर, क्लेयर टोमलिन व एमिली सनसंटेन ने मैरी के बारे में लिखा। 'राल्फ एम. वार्डले ने मैरी वुलस्टोनक्राफ्ट : ए क्रिटिकल बायोग्राफी (1966) लिखा। एडना निक्सन उन पर पुस्तक मैरी वुलस्टोनक्राफ्ट : हर लाईफ एंड टाइम्स (1971) की रचना की। एलेनोर ने मैरी वुलस्टोनक्राफ्ट (1972), क्लेयर टोमलिन ने 'द लाईफ एंड डेथ ऑफ मैरी वुलस्टोनक्राफ्ट (1974) व सनसंटेन ने ए डिफरेंट फेस : द लाईफ ऑफ मैरी वुलस्टोनक्राफ्ट (1975) लिखा।'[14]

इंग्लैण्ड के कानूनी टीकाओं पर अपने मत रखने वाले प्रोफेसर विलियम ब्लैकस्टोन कहते हैं, ' कानूनी रूप से पति–पत्नी एक व्यक्ति हैं। स्त्री के लिए शादी के बाद का कानूनी अस्तित्व है और यह केवल उसके पति के साथ समेकित है। उसमें स्त्री का संरक्षण, रख–रखाव, पहचान सभी कुछ जुड़ा है ... मैरी वुलस्टोनक्राफ्ट स्त्रियों को पुरुषों से कमतर नहीं समझती। वह स्त्रियों में शिक्षा की कमी को दूर करना चाहती है। वह दोनों को तर्कसंगत मानव के रूप में देखती है। मैरी वुलस्टोनक्राफ्ट का स्मरण नारीवादी संस्थापक और दार्शनिक के रूप में आज भी किया जाता है।'[15] मैरी वुलस्टोनक्राफ्ट जिस काल की बात करती है 'उस समय समाज की संरचना, विशेषाधिकार, विरासत में मिली सम्पत्ति सभी कुछ पुरुषों द्वारा नियंत्रित था। महिलाओं को वास्तव में कोई अधिकार प्राप्त नहीं थे उनको मतदान की भी आजादी नहीं थी।'[16] मैरी स्त्री अधिकारों की समर्थक और 'महान नारीवादी, दार्शनिक, मानवाधिकार कार्यकर्ता, आन्दोलनकर्ता, संस्थापक और प्रेरक थी।'[17] मैरी के विचारों की प्रशंसा और आलोचना विचार जगत में हुई। 'जॉन अबीगैबेल एडम्स ने एन हिस्टोरिकल एंड मोरल व्यू ऑफ द ओरिजिन एंड प्रोग्रेस ऑफ फ्रेंच रेवोल्यूशन में मैरी वुलस्टोनक्राफ्ट को खुलकर आलोचना की है। मैरिस डि टेलरंड और डॉ० ग्रगोरी का मानना था कि महिलाएँ पुरुषों के कभी भी समान नहीं होती। इसके अतिरिक्त अन्ना लोटिशिया बार्बोल और एलिजाबेथ कार्टर भी मैरी वुलस्टोनक्राफ्ट के विपक्ष में रुढ़िवादी महिलाओं के उदाहरण प्रस्तुत करती है।'[18] 'इतिहासकार हेनरी नोएल ब्रेल्साफोर्ड ने एक पुस्तक शैली, गॉडविन एंड देयर सर्कल (1913) में मैरी वुलस्टोनक्राफ्ट की पुस्तक 'विंडीकेशन ऑफ द राइट्स ऑफ वीमेन को अपनी शताब्दी की सबसे मूल पुस्तक माना है।'[19] 18वीं शदी के ब्रिटेन के कई चिंतक 'जैसे मैकाले और मैरी एजवर्थ ने इस

बात पर मैरी वुलस्टोनक्राफ्ट के साथ सहमति जताई कि बौद्धिक विकास, आत्मनिर्भरता और आर्थिक स्वतन्त्रता महिलाओं के विकास का अनिवार्य पक्ष है।[20] 'मैरी वुलस्टोनक्राफ्ट सार्वजनिक जीवन में महिलाओं को शामिल किए जाने हेतु आवाज उठाने वाली एक शक्तिशाली, बहु–प्रतिभाशाली, दृढ़ संकल्प रखने वाली जुझारू महिला थी। वह महिलाओं के जीवन को पूर्णतः बदलने की पक्षधर है।[21]

सन्दर्भ :

1. शुभ्रा, परमार, 'आधुनिक राजनीतिक दर्शन' (हैदराबाद, ओरियंट ब्लैकस्वॉन प्राइवेट लिमिटेड : 2019), पृ. 60.
2. वही
3. Alice S, Rossi, 'The Feminist Papers : From adams to de Beauvoir' (Northeastern : 1988), p. 25
4. कात्यायनी, सत्यम, ''संपादकीय प्रस्तावना–मैरी वुलस्टोनक्राफ्ट : स्त्री मुक्ति की आदि सिद्धान्तकार'' 'ए विडीकेशन्स ऑफ द राइट ऑफ वूमेन' मीनाक्षी (अनु.) (नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन : 2014), पृ. 17.
5. वही, पृ. 18.
6. वही, पृ. 22–23.
7. वही, पृ. 23.
8. वही
9. शुभ्रा परमार, वही, पृ. 58.
10. वही
11. कात्यायनी, सत्यम, वही, पृ. 19.
12. वही, पृ. 16.
13. शुभ्रा परमार, वही, पृ. 58.
14. Seana Shiffrin, "Paternalism Unconcionability Doctrine, and Accommodation", Philosophy and Public Affairs' 29(3) (2000), p. 205
15. Gerald, Dworkin, "Paternalism", 'the Stanford Encyclopaedia of Philosophy (Summer-2010) Edward N. Zalta (ed.)
16. Subrata Mukherji and Sushila Ramaswami, 'A History of Political thought : From Mary to Plato (New Delhi, PHI Learning Baillate limited : 2012), p. 356
17. शुभ्रा परमार, वही, पृ० 59
18. वही, पृ. 71.
19. वही, पृ. 61.
20. वही, पृ. 71.
21. Ferguson, "the Radical Ideas of Mary Wollstonecraft" 'Canadian Journal of Political Science, XXXII(3) P. 438-439 available at https://digitalcommons.ryerson.ca/politics,accessed. 17.4.2013

***